ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

शोध–प्रारूप

संकाय–मानविकी

विषय –हिन्दी

शोध का विषय :

''ओम प्रकाश वाल्मीकि, तुलसीराम एवं श्यौराज सिंह बेचैन की आत्म कथाओं का तुलनात्मक अध्ययन''

सुनील कुमार सिंह
13/04/2024

शोध निर्देशक

धर्मवीर कुमार
13/04/2024

शोधार्थी

विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग
कॉलेज, दलसिंहसराय
समस्तीपुर

डा0 सुनील कुमार सिंह
सहायक प्राचार्य–सह विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग
रामाश्रय बालेश्वर महाविद्यालय
दलसिंहसराय, समस्तीपुर, बिहार

धर्मवीर कुमार
पैट क्रमांक–E2209010
ग्राम+पो0–कबरिया
थाना–सदर,
जिला–दरभंगा–846009

शोध का शीर्षक :

''ओम प्रकाश वाल्मीकि, तुलसीराम एवं श्यौराज सिंह बेचैन की आत्म कथाओं का तुलनात्मक अध्ययन''

1. भूमिका / प्रस्तावना :

साहित्य का संबंध समाज से है, खासकर मानवीय समाज से । मानवीय समाज में भी हासिए पर स्थित समाज से आधुनिक साहित्य समाज के उन पीड़ित, दलित व मुख्यधारा से कटे हुए इंसान की संवेदना को प्रस्तुत करता है जो कहीं न कहीं किसी–न–किसी रूप मे अपने को ठगा सा महसूस करता है। साहित्य के इस लक्ष्य को सार्थक करने हेत साहित्यकार समाज की संवेदना के बीच गोता लगाता है और ऐसी भावाभिव्यक्ति प्रस्तुत करता है, जो मानवीय समाज के निर्माण में अहम भूमिका निभा सके।

आधुनिक हिन्दी गद्य की विधि विधाओं में 'आत्मकथा' विधा की महत्वपूर्ण स्थान है। हालांकि यह विधा जितना आसान समझ में आता है, उतना है नहीं। बड़े–बड़े साहित्यकार भी आत्मकथा लिखने की हिम्मत नहीं जुटा पाते। ऐसा इसलिए कि पूरी निष्ठा, तटस्थता एवं बेवाकी से अपने बारे में लिखना आसान नहीं होता। आत्मकथा साहित्य का व्यवस्थित इतिहास बहुत पुराना नहीं है। बनारसीदास कृत 'अर्द्धकथानक' हिन्दी की प्रथम आत्मकथा मानी जाती है । इस परंपरा में भारतेन्दु परिश्चन्द्र, अंबिकादत्त व्यास, श्यामसुन्दर दास,गुलाबर राय , सियाराम शरण गुप्त, अमृता प्रीतम, प्रतिभा अग्रवाल कृष्णा अग्निहोत्री, हरिवंशराय बच्चन यशपाल आदि ने आत्मकथा साहित्य की रचना की है। इस कड़ी में तीन महत्वपूर्ण आत्मकथा लेखक ओमप्रकाश बालमीकि, तुलसीराम एवं श्यौराज सिंह बेचैन

की आत्मकथा अत्यंत मार्मिक एवं मानवीय संवेदना को झकझोर देने वाला है। तीनों ही लेखक दलित कथाकार के रूप में चर्चित हैं। उन्होंने अपनी इन आत्मकथाओं में मानवीय समाज की आमानवीय प्रवृत्ति को सामाजिक पटल पर लाकर समाज के अधिष्ठाताओं के सामने ज्वलंत प्रश्न खड़ा करता है।

ओम प्रकाश वालमीकि आधुनिक हिन्दी दलित लेखकों में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। हिन्दी के दलित आन्दोलन से जुड़े बाल्मीकि ने आक्रोश व प्रतिरोध के स्थान पर दलित समाज में व्याप्त समस्याओं , उनके हो रहे शोषण, उनकी बदहाली एवं अस्तित्त्व के लिए संघर्ष करते हुए जनमानस का कारूणिक चित्रण किया है। उन्होंने अपनी आत्मकथा (जूठन) में दिखाया है कि किस तरह से उनका परिवार अभाव, पीड़ा, शोषण, प्रभु वर्ग के दमन का शिकार था। उनके परिवार का सदस्य किस तरह से दाने–दाने को मोहताज थे। 'जूठन' जो कि समृद्ध वर्ग के लिए त्याज्य होता है के लिए भी किस तरह से दलित वर्ग के लोग संघर्ष करते थे। जूठन की प्राप्ति के लिए भी किस तरह के दुत्कारा जाता था। इन समस्त स्थितियों का यथातथ्य कारूणिक चित्रण कर बाल्मीमिजी ने मानवीय संवेदना को झकझोर दिया है। प्रभु वर्ग के सामने उन्होंने ऐसा सवाल खड़ा किया है, जिसका कोई जबाव नहीं ।

डॉ0 तुलसीराम आधुनिक हिन्दी दलित आत्मकथा लेखकों में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इन्होंने अपनी आत्मकथा दो खण्डों में लिखी है। प्रथम खण्ड का शीर्षक 'मुर्दहिया' एवं द्वितीय खण्ड का शीर्षक 'मणिकर्णिका' है एवं जिसम उन्होंने अपने जनपद की उन समस्याओं का चित्रण किया है जिससे मानवीय समाज भयभीत था। इसमें उन्होंने अपने बचपन से लेकर

इंटर तक की जीवन यात्राा का यथातथ्य चित्रण किया है। नीची जाति में जन्मे एवं शारीरिक विकलांगता के शिकार तुलसी ने समाज की जिन उपेक्षाओं को झेला है, उन्हें अत्यंत मार्मिक रूप में अपनी आत्मकथाओं में चित्रित किया है। गांव परिवार की गरीबी, दलितों की स्थिति, उनके रहन–सहन, खान–पान, पर्व–त्यौहार, लोक मान्यताएँ, जादू–टोना, भूत–प्रेत आदि का वारीकि से चित्रण किया है। इनकी आत्मकथा दलित समाज की समस्त स्थितियों पर पूर्ण प्रकाश डालती है।

शौराज सिंह बेचैन हिन्दी के चर्चित दलित आत्मलेखकों में से हैं। उनकी आत्मकथा का शीर्षक है "मेरा बचपन मेरे कंधों पर" । इसमें बेचैन जी ने दलित समाज के बच्चों की संघर्षगाथा को प्रस्तुत किया है। बच्चे भगवान के रूप माने जाते हैं। समाज के हर बच्चों में भगवान का दर्शन होना चाहिए, पर दलित, दमित, शोषित समाज के बच्चे किस तरह से नारकीय जीवन जीने को मजबूर हैं, किस तरह से वह बालपन में ही अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए संघर्षरत हैं, इसका पूरा दृश्य बेचैन जी की आत्मकथाओं में परिलक्षित होता है। दलित बच्चों पर हो रहे अमानवीय हमले को दिखाकर लेखन ने उन बच्चों के प्रति समाज की दृष्टि बदलने की कोशिश की है।

उपर्युक्त तीनों दलित आत्मकथा लेखकों ने साहित्य जगत में क्रांति ला दी है। यह समाज हर व्यक्ति का , हर वर्ग एवं हर संपदाय का है। हर किसी को प्रकृति निर्मित इस समाज में रहने का हक है। इस बात का सिद्ध करने हेतु तीनों ही लेखकों ने अपनी लेखनी से जो पराक्रम दिखलाया है वह अविस्मरणीय है।

2. प्रस्तावित शोध की आवश्यकता :

हर साहित्यकार की अपनी– अपनी समझ होती है। अपनी उसी योग्यता, कुशलता एवं कारयित्री प्रतिभा के बल पर वे समाज की समस्याओ का साहित्यिक प्रस्तुति देता है। हिन्दी के तीन महत्वपूर्ण दलित आत्मकथा लेखकों, ओमप्रकाश बाल्मीकि, डॉ0 तुलसीराम एवं श्यौराज सिंह बेचैन की आत्मकथाओं का तुलनात्मक अध्ययन इसलिए आवश्यक है कि तीनो ही लेखकों की दृष्टि को सम्यक रूप में प्रतिस्थापित कर समाज के बीच ऐसा संदेश देना कि समाज का हर वर्ग दलित समाज के प्रति सकारात्मक सोंच रखने पर मजबूर हो जाए। तीनों ही लेखकों ने दलित समाज के जिस दृश्य को प्रस्तुत किया है आत्मकथा की कथाभूमि उसके परिवश, परिवंशगत समस्याओं आदि का तुलनात्मक अध्ययन कर दलित समाज की समस्याओं को व्यापक फलक पर प्रस्तुत करना एवं उनके प्रति सकारात्मक दृष्टि उत्पन्न करना ही इस शोध की आवश्यकता को प्रदर्शित करता है।

3. प्रस्तावित शोध विषय का महत्व :

प्रस्तावित शोध विषय अत्यंत महत्वपूर्ण है। तीनो ही आत्मकथा लेखकों की आत्मकथा को अलग–अलग पढ़ने, समझने व मनन करने से दलित समाज की समस्याओं का पता तो चलता है, पर तीनो को सम्यकरूपेण तुलनात्मक दृष्टि से अध्ययन करने पर एक ऐसे मुकाम पर पहुँचते हैं, जहाँ पर पता चलता है कि वाकई दलित समाज कितने मुहानों पर शोषित हो रहा है। दलित समाज की समस्याओं को व्यापक रूप में सामने लाना उन समस्याओं के प्रति समाज के प्रबुद्ध वर्ग की दृष्टि आकर्षित करना एवं समस्याओं का समाधान कर एक समता मूलक समाज के निर्माण पर बल

देना है जहाँ हर जाति, वर्ग धर्म व सम्प्रदाय के लोगा आपसी भाईचारे के साथ जीवनयापन कर सके।

4. पूर्वकृत शोधकार्य :

ओमप्रकाश बाल्मीकि, डॉ0 तुलसीराम एवं श्यौराज सिंह बेचैन की आत्मकथा पर केन्द्रित जो शोधकार्य हुए हैं, उनकीसूची इस प्रकार है –

1. ओमप्रकाश बाल्मीकि के साहित्य में संघर्ष चेतना, नीलम, 2014, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक हरियाणा।
2. हिन्दी दलित साहित्य में ओमप्रकाश बाल्मीकि का प्रदान वणकर महेन्द्र कुमार एल., उत्तर गुजरात विश्वविद्यालय पारण, 2015
3. ओमप्रकाश वाल्मीकि की रचनाओं में दलित चेतना श्रीजा, आर0 एस0 केरल विश्वविद्यालय,, 2016
4. ओमप्रकाश वाल्मीकि ओर बाबूराव बागुल के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन, संतोष लड़कू गायकवाड़, मुंबई विश्वविद्यालय , मुम्बई, 2020
5. प्रेमचंद और ओमप्रकाश वाल्मीकि के कहानियों मे निहित संवेदना का तुलनात्मक अध्ययन, शदानंद वर्मा, जामिया मिलिया विश्वविद्यालय, 2022
6. हिन्दी का दलित साहित्य एवं ओमप्रकाश वालमीकि जी प्रसाद , हैदराबाद विश्वविद्यालय, 2012
7. ओमप्रकाश वाल्मीकि के साहित्य में दलित चेतना, सरोज लामा, उत्तरवंग विश्वविद्यालय, दार्जिलिंग, 2021
8. ओमप्रकाश वाल्मीकि के साहित्य में पुणर्वास की समस्या दिलना के, केरला केन्द्रीय विश्वविद्यालय, 2021
9. समकालीन हिन्दी कहानी में गैर दलितों का दलित विषयक लेखन, दिनेश राम, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, 2003

10. ओमप्रकाश वाल्मीकि के साहित्य में पुनर्वास की समस्या, दलिना के0 केरल केन्द्रीय विश्वविद्यालय, 2021

उपर्युक्त अध्ययनों के अतिरिक्त भी ओमप्रकाश बाल्मीकि, डॉ0 तुलसीराम एवं श्यौराज सिंह बेचैन की आत्मकथा साहित्य पर शोध कार्य किए गए होंगे। उपर्युक्त शीर्षकों से पता चलता है कि तीनों लेखकों की आत्मकथा को केन्द्र में रख कर तुलनात्मक अध्ययन अभी तक नहीं किया गया है। अतः उपर्युक्त शाध विषय पर शोध कार्य करना समीचीन व सार्थक होगा।

5. शोध के आधार ग्रन्थों की सूची :

प्रस्तावित शोध हेतु आधार ग्रंथ के रूप में ओमप्रकाश बाल्मीकि, डॉ0 तुलसीराम एवं श्यौराज सिंह बेचैन द्वारा लिखित आत्मकथा को लिया जाएगा जो इस प्रकार है –

1. जूठन, ओम प्रकाश वाल्मीकि,राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, वर्ष, 2008
2. मुर्दहिया, डॉ0 तुलसीराम, राजकला प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010
3. मणिकर्णिका, डॉ0 तुलसीराम, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014
4. मेरा बचपन मेरे कंधों पर, श्योराज सिंह बेचैन, वाणी प्रकाशन, 2023

6. प्रस्तावित शोध विषय की परिकल्पना :

प्रस्तावित शोध विषय के तहत ओमप्रकाश वाल्मीकि, डॉ0 तुलसीराम एवं श्यौराज सिंह बेचैन की आत्मकथा का तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा। इस अध्ययन से दलित समाज, दलित समाज को समस्या समस्या को उत्तर करने वाले कारक समस्या के निदान के उपाय आदि पर सम्यक विचार किया जाएगा। इस अध्ययन से सदियों से दमित, उत्पीड़ित शोषित व

वंचित वर्ग के प्रति समाज की दृष्अि बदलेगी व उसके उत्थान की बात की जाएगी।

7. शोध प्रविधि– किसी भी शोध ग्रन्थ का मूर्त रूप देने के लिए अनेक कार्य विधियों का प्रयोग जाता है। यह शोध प्रविधियाँ शोधकर्त्ताओं को अपने लक्ष्य तक पहुँचने में मदद करती है। शोधार्थी आवश्यकतानुसार विविध शोध प्रविधियों का उपयोग अपने शोध कार्य में करते हुए अपने लक्ष्य तक पहुँचता ह। प्रस्तुत शोध के दौरान आवश्यकतानुसार व्याख्यात्मक, विश्लेषणात्मक, विवेचनात्मक, आगमन–निगमन, समीक्षात्मक, साक्षात्कार आदि विधि का उपयोग किया जाएगा।

8. शोध अध्ययन का विभाजन :

प्रथम अध्यय : (i) आत्मकथा साहित्य, अभिप्राय एवं साहित्यिक महत्व
(ii) तुलनात्मक शोध : अभिप्राय एवं आवश्यकता

द्वितीय अध्ययः आत्मकथा साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

तृतीय अध्याय : ओमप्रकाश बाल्मीकि, डॉ0 तुलसीराम एवं श्यौराज सिंह बेचैन की आत्मकथा का परिचयात्मक अध्ययन

चतुर्थ अध्यायः आत्मकथा साहित्य की दृष्टि से जूठन, मुर्दहिया, मणिकर्णिका एवं मेरा बचपन मेरे कंधों पर का तुलनात्मक अध्ययन

पंचम अध्याय : दलित समस्या की दृष्टि से जूठन, मुर्दहिया, मणिकर्णिका का एवं मेरा बचपन मेरे कंधो पर का तुलनात्मक अध्ययन

षष्ठ अध्याय : ओमप्रकाश बाल्मीकि, डॉ0 तुलसीराम एवं श्यौराज सिंह बेचैन की आत्मकथा का शिल्पगत अध्ययन

निष्कर्ष

9. प्रस्तावित शोध विषय की संदर्भ सूची :

(1) सहायक ग्रंथ :

1. भारतीय दलित साहित्य, सं0 मनोजकुमार पटेल, दर्पण प्रकाशन, बल्लभ विद्यानगर (गुजरात) सं0 वर्ष, 2008
2. दलित साहित्य के स्तम्भ, डॉ0 राजपाल सिंह 'राज' नअराज प्रकाशन, दिल्ली, सं0 वर्ष 2007
3. स्वातंत्र्योतर हिन्दी के आँचलिक उपन्यासों में चित्रित दलित जीवन, डॉ0 शम्भूनाथ रामचरण द्विवेदी, पूजा पब्लिकेशन, कानपुर, सं0 वर्ष, 2012
4. हिन्दी उपन्यासों में दलित चेतना, डॉ0 रामचन्द्र माली, विद्या प्रकाशन, कानपुर सं0 वर्ष, 2012
5. दलित चेतना और हिन्दी उपन्यास, डॉ0 एन0 एस0परमार, चिन्तन प्रकाशन, कानपुर, सं0 वर्ष, 2010
6. मोहनदास नैमिशराय के उपन्यासों में विद्रोह, प्रा0 विधाते विकास कुंडलिक, ए0 बी0 एस0 प्रकाशन, वाराणसी, सं0 वर्ष 2013
7. दलित आन्दोलन के विविध पक्ष, डॉ0 शत्रुध्न कुमार, आकाश प्रकाशन, गाजियाबाद, सं0 वर्ष, 2009
8. दलित कविता का यथार्थवादी परिदृश्य, डॉ0 दोडडा शेषु बाबु, क्वालिटी पब्लिशर्स, कानपुर, सं0 वर्ष–2011
9. आधुनिक हिन्दी कविता में दलित नारी, डॉ0 के0 सुधा, अमन प्रकाशन, कानपुर, सं0 वर्ष 2011
10. दलित व साहित्य में प्रमुख विधाएँ, सं0 माता प्रसाद, आकाश पब्लिशर्स, गाजियाबाद, सं0 वर्ष–2009

11. डॉ0 आम्बेडकर दलित और बौद्ध धर्म, डॉ0 जयप्रकाश कदर्म, नवभारत प्रकाशन, दिल्ली, सं0 वर्ष 2009
12. चर्चित हिन्दी कि दलित आत्मकथाएँ एक मूल्यांकन, डॉ0 ललित कौशल, साहित्य संस्थान, प्रकाशक गाजियाबाद, सं0 वर्ष 2010
13. हिन्दी दलित आत्मकथाएँ एक अनुशीलन, डॉ0 अभय परमार, ज्ञान पकाशन कानपुर, सं0 वर्ष –2011
14. भारतीय साहित्य एवं दलित चेतना, सं0 डॉ0 धनंजय चौहाण, डॉ0 धीरजभाई वणकर, ज्ञान प्रकाशन, सं0 वर्ष–2010
15. चीख, डॉ0 धनंजय चौहाण, रचना प्रकाशन, जयपुर, सं0वर्ष, 2010

(2) पत्र–पत्रिकाएँ :

1. 'हंस' दिसम्बर, 2013
2. आलोचना त्रैमासिक, अक्टूबर दिसम्बर, 2013
3. अम्बेडकर इन इन्डिया, फ़रवरी–मार्च , 2014
4. आयुध, जुलाई–सितम्बर, 2013
5. बयान, अगस्त, 2012
6. प्रकाशन समाचार, दिसम्बर, 2012

13/04/2024

13/04/2024

विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग
आर0 बी0 कॉलेज, दलसिंहसराय
समस्तीपुर

शोध सारांश

प्रस्तावित शोध विषय आधुनिक हिन्दी दलित आत्मकथा साहित्य के पुरोधा **ओम प्रकाश वाल्मीकि, तुलसीराम एवं श्यौराज सिंह बेचैन की आत्मकथाओं का तुलनात्मक अध्ययन** पर केन्द्रित है। इस शोध में तीनों ही आत्मकथाकारों के आत्मकथा साहित्य में निहित मूलसंवेदना, उसकी, समस्या, समस्याओं के समाधान का तुलनात्मक तथ्य प्रस्तुत किया जाएगा। इस शोध में तीनों आत्मकथाकारों की सामाजिक समझ, उनकी पैनी दृष्टि, संवेदनात्मक अनुभूति से पाइकों को अवगत कराने का प्रयास किया जाएगा। समाज में समानता, बंधुत्व, भाईचारा, मानवीय दृष्टि व सकारात्मक सोंच उत्पन्न करने में यह शोध करागर सिद्ध होगा।

सुनील कुमार सिंह
13/04/2024
शोध निर्देशक

विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग
...कॉलेज, दलसिंहसराय
समस्तीपुर

डा0 सुनील कुमार सिंह
सहायक प्राचार्य–सह विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग
रामाश्रय बालेश्वर महाविद्यालय
दलसिंहसराय, समस्तीपुर, बिहार

धर्मवीर कुमार
13/04/2024
शोधार्थी

धर्मवीर कुमार
पैट क्रमांक–E2209010
ग्राम+पो0–कबरिया
थाना–सदर,
जिला–दरभंगा–846009

डा0 सुनील कुमार सिंह
सहायक प्राचार्य–सह विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग
रामाश्रय बालेश्वर महाविद्यालय
दलसिंहसराय, समस्तीपुर, बिहार

आवासीय पता
अशोक नगर, दलसिंहसराय
समस्तीपुर, बिहार.–848111
मो0–8210275465
8676014363
ईमेल–sunilprtdav@gmail.com

पत्रांक ....   दिनांक 13/04/2024

सहमति प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि धर्मवीर कुमार, शोध छात्र, विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग, ल0 ना0 मि0 वि0वि0, दरभंगा का प्रस्तावित शोध, विषय **"ओम प्रकाश बाल्मीकि, तुलसीराम एवं श्यौराज सिंह बेचैन की आत्मकथाओं का तुलनात्मक अध्ययन"** पर निर्देशन देना मुझे स्वीकार है। मेरी जानकारी के अनुसार इस शोध विषय पर पूर्व में कोई शोध कार्य सम्पन्न नही हुआ ।

मैं इनके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ।

सुनील कुमार सिंह
13/04/2024
(डॉ0 सुनील कुमार सिंह)

पर्यवेक्षक

विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग
आर० बी० कॉलेज, दलसिंहसराय
समस्तीपुर